Omniscient
(An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal)
Vol.1 Issue 2 June 2023 EISSN: 2583-7575

कोरोना काल में आगरा जनपद की माध्यमिक स्तरीय शिक्षा व्यवस्था के बदले स्वरूप का अध्ययन

डॉ. ऊषा शर्मा

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा
Corresponding author: ushasharma9216@gmail.com
Available at https://omniscientmjprujournal.com

सार

जिस प्रकार जीने के लिए सांस की आवश्यकता है ठीक उसी प्रकार एक अच्छा मनुष्य बनने और अपने समाज की तरक्की के लिए शिक्षा बहुत जरूरी है। बिना शिक्षा के मनुष्य एक पशु के समान ही व्यवहार करता है। प्रस्तुत शोध के माध्यम से कोरोना काल में आगरा जनपद की माध्यमिक स्तर की शिक्षा पर क्या प्रभाव पड़ा और उसका स्वरूप कैसा बदला यह पता करने का प्रयास किया गया है कि विद्यार्थियों को क्या समस्याएँ आई। उनकी शिक्षा की क्या व्यवस्था थी? क्या शिक्षा सुचारू रूप से मिल पाई या नहीं। यह जानने का प्रयास किया गया है। साथ ही साथ यहपता लगाने का प्रयास किया गया कि कोरोना काल में अध्यापक व अध्यापिकों को इन किशोर व किशोरियों को शिक्षा देने में किन-किन कठिनाइयों का सामना करना पड़ा था। विद्यालय के अलावा बच्चा अपना सारा समय तो घर में ही बिताता है। कोरोना काल में तो वह विद्यालय गये ही नहीं, तब उनके माता-पिता को अपने बच्चों की पढ़ाई का सारा भार ज्यादातर खुद ही उठाना पड़ा था। इन सबने उस समय में शिक्षा के स्तर में क्या बदलाव देखा।

प्रस्तावना

भारत भूमि अनैक विद्वानों की जन्मभूमि रही है। अति प्राचीन काल से ही भारतीय समाज में शिक्षा को महत्वपूर्ण स्थान प्रदान किया जाता रहा है। वैदिक काल का जब हम शिक्षा की दृष्टि से अध्ययन करते हैं तो पाते हैं कि उस युग में शिक्षा की अत्यंत उन्नत व्यवस्था थी। वेदकालीन साहित्य में शिक्षा की नाना प्रकार से प्रशंसा की गई है। वैदिक काल से लेकर आज तक के समय में भी भारतीय समाज में शिक्षा को बड़े ही आदर की दृष्टि से सम्मानित किया जाता है। देश व काल के अनुसार शिक्षा का पाठ्यक्रम व उद्देश्य बदलते रहे हैं। इसकी व्यवस्था तथा पद्धतियाँ बदलती रही हैं तथा इसके केंद्रों का समयानुसार उत्थान तथा पतन होता रहा है। आज के समाज में भी इसको महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त हैं।

गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर के अनुसार- "शिक्षा का उद्देश्य संपूर्ण से व्यक्ति में एकत्व की भावना का विकास करना है।" रविन्द्रनाथ टैगोर चाहते थे कि शिक्षा द्वारा व्यक्ति अर्थात विद्यार्थियों की क्षमताएँ विकसित हो जाएं, जिससे वह प्रकृति के साथ सामंजस्य स्थापित कर सके और मनुष्यता का व्यवहार कर सके। शिक्षा एक परिवर्तनशील प्रक्रिया है। समाज की आवश्यकताओं व परिस्थितियों के अनुसार शिक्षा के स्वरूप में भी निरंतर परिवर्तन होते रहे हैं। इस प्रकार कोरोना काल में भी शिक्षा का स्वरूप बदलना स्वाभाविक है।

कोरोना काल एक ऐसा समय है, जिसके विषय में पहले ना किसी ने सुना और ना ही ऐसा देखा गया और ना कभी किसी ने ऐसे समय की कल्पना भी की होगी। कोरोना काल से तात्पर्य आज के समय से हैं, जो कोरोना वायरस के कारण

हमें देखना पड़ा है और इसने संपूर्ण विश्व को अपनी चपेट में ले लिया है।

कोरोना वायरस यानि की कोरोना वायरस डिसिज कोविड-19 बहुत सूक्ष्म लेकिन बहुत ही घातक और प्रभावी है। कोरोना वायरस मानव के बाल की तुलना में 900 गुना छोटा होता है।

दिसंबर 2019 में चीन के बुहान शहर में नोबल कोरोना वायरस का पहला मामला सामने आया था। इस संक्रमण से प्रभावित लोगों में सर्दी, खांसी, जुखाम, बुखार तथा सांस लेने में तकलीफ पाई गयी थी। नोवल कोरोना वायरस (NCOV/COVID-19) कोरोना वायरस परिवार का सातवाँ वायरस है। इसकी अनुवांशिक संरचना 80 फीसदी तक चमगादड़ों में पाये जाने वाले सार्स वायरस जैसी मिली। कोरोना वायरस का प्रभाव केवल चीन तक ही सीमित नहीं रहा, अपितु इस वायरस ने अधिकांश देशों को अपनी चपेट में ले लिया है। ऐसे में भारत भी इससे अछूता न रह सका।

30 जनवरी, 2020 को भारत में कोरोना का पहला केस सामने आया और देखते ही देखते यह भारत के विभिन्न राज्यों में फैल गया। कोरोना के बढ़ते हुए प्रभाव को नियंत्रित व सीमित करने के लिए केंद्र सरकार द्वारा संपूर्ण भारत में 24 मार्च, 2020 को 21 दिन के पहले लॉकडाउन की घोषणा की गई। परंतु कोरोना संक्रमितों और उसके कारण मरने वालों की संख्या को देखते हुए तीन और लॉकडाउन लगाये गए अर्थात् कुल 4 लॉकडाउन लगाए गए और विभिन्न राज्यों में संक्रमण की स्थिति को देखते हुए इसको समय-समय पर बढ़ाया जाता रहा है। इतने लंबे समय तक लॉकडाउन रहने के कारण इसका सकारात्मक प्रभाव यह रहा कि उस समय मे कोरोना बहुत अधिक नहीं फैल सका तथा भारत सरकार द्वारा कोरोना से बचाव के लिए वेंटिलेटर व कोरोना से बचाव के अनेक उपकरणों की उचित व्यवस्था भी कर ली गई, जिससे जब-जब अनलॉक की प्रक्रिया शुरू होने पर कोरोना संक्रमितों को उचित उपचार दिया जा सके। परंतु इस कोरोना के कारण लगाये गए लॉकडाउन के अनेक दुष्परिणाम भी सामने आये। यह भी कहा जा सकता है कि इस समय में देश के विकास की गति कहीं थम सी गई। आम व्यक्ति ही नहीं अपितु लॉकडाउन के कारण सभी वर्ग व उम्र के लोग प्रभावित हुए हैं। लॉकडाउन के कारण ऑफिस, विद्यालय, कॉलेज, होटल, सिनेमा हाल सार्वजनिक स्थलों को लंबे समय तक बंद कर दिया गया था।

इन सभी चीजों के बंद होने से देश की अर्थव्यवस्था को बहुत नुकसान पहुँचा। हर समुदाय के लोगों की स्थिति खराब हो गयी। बहुत सारे लोगों की नौकरियाँ चली गईं। लोगों को खाने के लिए सरकार दे तो रही थी परंतु आम आदमी अपनी आवश्यक चीजों तक के लिए दूसरों पर मोहताज हो गया। परंतु इन नुकसानों के साथ-साथ एक और नुकसान ऐसा था जिसको बिल्कुल भी नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है और उसकी कीमत हमारी आने वाली पीढ़ी जो कि हमारे देश का भविष्य है, उसने चुकाई है। अर्थात् विद्यालय बंद होने के कारण बच्चों की शिक्षा पर बहुत ही बुरा असर पड़ा। क्योंकि शिक्षा की प्रक्रिया सतत् रूप से चलने वाली प्रक्रिया है तथा जब भी कोई बदलाव हुए हैं शिक्षा को उसी के अनुसार बनाने का प्रयास किया गया है। शिक्षा एक गतिशील प्रक्रिया है।

Vol.1 Issue 2 June 2023 EISSN: 2583-7575

इसका स्वरूप स्थिर नहीं है। अतः जब भी कोई रुकावट आती है तो परिणाम स्वरूप विद्यार्थी और अध्यापक तथा परिवार व समाज सभी को इसका नुकसान उठाना पड़ता है। शिक्षा ही आगे बढ़ने और सफलता का एक साधन है, जीवन जीने के लिए।

शिक्षा के महत्व को देखते हुए इस कोरोना काल में शिक्षा प्रदान करने की भी आवश्यकता महसूस हुई। क्योंकि विद्यार्थियों की शिक्षा काफी समय तक तो बाधित रही, जिसके कारण बच्चों का मानसिक व शारीरिक नुकसान होता गया। ऐसे समय में यह महसूस किया गया कि उस सत्र में ही विद्यार्थियों की शिक्षा को सुचारू कैसे रखा जाए, जिससे संक्रमण का खतरा भी न हो और शिक्षा भी पूर्ण हो जाए क्योंकि दोनों में से किसी बात को भी नजर अंदाज नहीं किया जा सकता है।

अतः इन परिस्थितियों को देखते हुए ऑनलाइन शिक्षा पर जोर दिया गया क्योंकि इस आपातकाल में तकनीकी ही एक ऐसा माध्यम थी, जिससे विद्यार्थी व अध्यापकों को सुरक्षा के दायरे में रखकर उनके सत्र के दौरान ही शिक्षा को पूर्ण कराया जा सकता था। ऑनलाइन शिक्षा व्यवस्था औपचारिक तो नहीं है परंतु इसे पूर्णतः अनौपचारिक भी नहीं कह सकते। शिक्षक व विद्यार्थी अपनी बात को एक दूसरे के सामने रख पा रहे थे। परंतु फिर भी कोरोना काल में बच्चों की शिक्षा सामान्यतः चलने वाली शिक्षा की तरह बिल्कुल नहीं रही। विद्यार्थियों के साथ-साथ अध्यापकों ने भी अनेक समस्याओं का सामना किया, इस कोरोना काल में।

अध्ययन की आवश्यकता व महत्व

परिवर्तन ही सृष्टि का शाश्वत नियम है, परिवर्तन से सृष्टि में नवीनता आती है। प्रतिक्षण सृष्टि में परिवर्तन हो रहा है। ये परिवर्तन प्रकृति तक सीमित नहीं है। समाज में भी प्रतिक्षण परिवर्तन हो रहा है। पुरानी मान्यताओं की जगह नई मान्यताएँ आ रही हैं। समाज में परिवर्तन के साथ-साथ शिक्षा में भी परिवर्तन हो रहा है। और शिक्षा के स्वरूप में परिवर्तन की आवश्यकता समय की परिस्थितियों के अनुसार बदलती रहती है। कोरोना काल की बदलती हुई स्थिति में शिक्षा व्यवस्था के बदलते स्वरूप की भी आवश्यकता है। शिक्षा में तकनीकी की आवश्यकता को बहुत समय पहले ही बताया गया है। परंतु यह पूरी तरह लागू नहीं हो पा रही थी।

कोरोना काल में शिक्षा प्रक्रिया में काफी परिवर्तन हुए हैं, जिसके कुछ फायदे व कुछ नुकसान भी है। कोरोना काल में ऑनलाइन शिक्षा पर जोर दिया गया ताकि कुछ हद तक तो वह शिक्षा प्राप्त कर सकें क्योंकि ऑनलाइन शिक्षा औपचारिक शिक्षा की जगह पूरी तरह से तो ले नहीं सकती पर ऑनलाइन के माध्यम से पाठ्यक्रम तो पूरा किया जा सकता है। ऑनलाइन शिक्षा के माध्यम से कोरोना काल में शिक्षा की प्रक्रिया सतत् रूप से चलती रहेगी।

अध्ययन के द्वारा विद्यार्थी, परिवार व समाज को कोरोना काल में किन समस्याओं का सामना करना पड़ा। किस प्रकार की शिक्षा प्राप्त हुई। ये जानने को अध्ययन के द्वारा प्रयास किया गया है।

उद्देश्य

1. कोरोना काल में आगरा जनपद की माध्यमिक शिक्षा व्यवस्था के बदलते स्वरूप का अध्ययन।
2. कोरोना काल में तकनीकी शिक्षा के प्रति बढ़ती जागरूकता का अध्ययन।
3. कोरोना काल में बदली शिक्षा व्यवस्था का छात्रों व शिक्षकों पर प्रभाव का अध्ययन।
4. कोरोना काल में शिक्षा के एक समान वितरण का अध्ययन।

संबंधित साहित्य का अध्ययन

भारत में हुए अध्ययन- सिंह सरोज (30 अक्टूबर, 2020) ने ऐनुअल स्टेट ऑफ एजुकेशन। पाण्डेय आलोक (19 मार्च, 2020) ने कोरोना के शिक्षा व्यवस्था व परीक्षा प्रणाली पर प्रभाव। तिवारी उमेश (01 अप्रैल, 2020) ने कोरोना के माध्यमिक शिक्षा पर प्रभाव। मिश्रा बबीता (22 अप्रैल, 2020) कोरोना काल में माध्यमिक शिक्षा की परीक्षा प्रणाली। नारायण बद्री (19 अप्रैल, 2020) कोरोना काल में शिक्षा के क्षेत्र में आये बदलाव। जैसवाल ज्योति (05 सितंबर, 2020) कोरोना काल में शिक्षकों की स्थिति व कार्य। यूनिसेफ ने भारत में कोरोना के कारण व शिक्षा के क्षेत्र में हुए बदलाव व विद्यालयों की स्थिति का अध्ययन किया। यूनेस्को ने अक्टूबर, 2020 ने कोविड-19 के कारण शिक्षा के क्षेत्र में बढ़ती लैंगिक असमानता पर अध्ययन किया।

अध्ययन की विधि

अनुसंधान की सफलता उसकी अध्ययन प्रक्रिया पर निर्भर करती है। प्रस्तुत शोध की प्रकृति को ध्यान में रखते हुए वर्णात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। शिक्षा संबंधी अनुसंधान के क्षेत्रों में वर्णात्मक सर्वेक्षण विधि का महत्वपूर्ण स्थान है।

न्यायदर्श का चयन

प्रस्तुत अध्ययन हेतु आगरा शहर के माध्यमिक स्तरीय विद्यालयों का सर्वेक्षण किया गया है। इसके अंतर्गत माध्यमिक स्तर के 50 विद्यार्थी 20 विद्यार्थियों के अभिभावक व विद्यालयों में कार्यरत 20 शिक्षकों को लिया गया है। अर्थात् 100 व्यक्तियों को यादृच्छिक प्रणाली के माध्यम से चुना गया है।

उपकरण का चयन

आंकड़ों के संकलन के लिए विश्वसनीय व वैद्य परीक्षण का चयन अनिवार्य है, जिसके लिए स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है।

परिकल्पनाओं का परीक्षण

उपरोक्त प्रश्नों के उत्तर के आधार पर शून्य परिकल्पना-1 'कोरोना काल में आगरा जनपद की माध्यमिक शिक्षा व्यवस्था के स्वरूप मे कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जायेगा अस्वीकृत होती है क्योंकि कोरोना काल मे 'शिक्षा व्यवस्था अत्यधिक परिवर्तित हुई है। न केवल पढ़ाने के तरीके में अंतर आया है अपितु समय सारणी व परीक्षा प्रणाली में भी कई बदलाव किये गये हैं। जहाँ कोरोना से पूर्व ऑफलाइन कक्षाएं होती थीं वहीं कोरोना काल के दौरान ऑनलाइन कक्षाओं को बेहतर विकल्प मानकर ऑनलाइन कक्षाओं के माध्यम से विद्यार्थियों को पढ़ाया जा रहा है। ऑनलाइन कक्षाओं के

कारण शिक्षक छात्र सम्बंध भी प्रभावित हुआ है जिसका मुख्य कारण यह है कि इस समय शिक्षक व छात्रों की आमने-सामने बैठकर अर्न्तक्रिया नहीं हो पा रही है। इसके अतिरिक्त छात्रों पर शारीरिक व मानसिक प्रभाव भी देखने को मिले हैं। कोरोना काल के दौरान छात्रों को समूह कार्य के अवसर कम या न के बराबर प्राप्त हुए हैं तथा पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं (खेल-कूद, प्रतियोगिता सांस्कृतिक कार्यक्रम व अन्य कार्य) से भी छात्र वंचित रहे हैं। जिसका प्रभाव छात्रों पर शारीरिक व मानसिक रूप से पड़ा है। कोरोना काल के दौरान पाठ्यक्रम में भी परिवर्तन हुआ है। सभी कक्षाओं का पाठ्यक्रम 20 से 30 प्रतिशत तक कम कर दिया गया है। जिसके कारण छात्र अपनी कक्षा के सम्पूर्ण पाठ्यक्रम के कुछ अंश को सीखने से वंचित रह जायेंगे साथ ही परीक्षा प्रणाली में भी परिवर्तन किया गया है। परीक्षा में वस्तुनिष्ठ प्रश्नों की संख्या बढ़ा दी गई है तथा कुछ परिक्षाऐ तो पूर्णतः वस्तुनिष्ठ प्रश्नों पर ही आधारित थी जिसके कारण छात्रों की योग्यता का सही आंकलन भी संभव नहीं हो पा रहा है। कोरोना काल के दौरान बोर्ड परीक्षाएं भी प्रभावित हुई है। पहली बार छात्रों को बिना परीक्षाओं के पूर्ण हुए उत्तीर्ण कर दिया गया तथा नई कक्षा में प्रोन्नत कर दिया गया।

उपरोक्त प्रश्नों के उत्तर के आधार पर शून्य परिकल्पना-2 कोरोना काल में तकनीकी शिक्षा के प्रति जागरुकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जायेगा निरस्त होती है क्योंकि कोरोना काल में तकनीकी शिक्षा के प्रति जागरुकता में अत्यधिक वृद्धि हुई है। कोरोना काल में तकनीकी ही एक ऐसा माध्यसम है जिसके द्वारा देश प्रगति के पथ पर बढ़ रहा है न केवल विभिन्न मल्टीनेशनल कम्पनियों का कार्य तकनीकी पर आधारित है अपितु आम क्रियाओं का क्रियान्वयन भी तकनीकी पर ही पूर्णतः निर्भर हो गया है। तकनीकी के कारण ही विद्यालय बंद होने पर भी शिक्षण-प्रशिक्षण कार्य सुचारू रूप से चल रहा है। ऐसे में तकनीकी शिक्षा के प्रति जागरुकता पहले से अधिक बढ़ गयी है। तकनीकी शिक्षा को शिक्षा के अनिवार्य अंग के रूप में देखा जा रहा है। मात्र छात्रों के लिए ही नहीं अपितु शिक्षकों के लिए भी तकनीकी शिक्षा को आवश्यक व अनिवार्य समझा जा रहा है। यही कारण है कि शिक्षकों के लिए तकनीकी से सम्बंधित प्रशिक्षण कार्यक्रम भी चलाये जा रहे हैं जिसके अन्तर्गत शिक्षकों को आवश्यक तकनीकी कार्यों का प्रशिक्षण दिया जा रहा है ताकि उन्हें शिक्षण कार्य के समय किसी प्रकार की समस्या का सामना न करना पड़े। कोरोना काल में ऑनलाइन क्लासेस व अन्य तकनीकियों के द्वारा शिक्षण कार्य कराये जा रहे हैं जिसका परिणाम यह हुआ है कि सभी अभिभावक अपने बालकों को कम्प्यूटर कोर्स व अन्य तकनीकी उपकरणों को चलाने हेतु उनको एक्स्ट्री क्लासेस लगा रहे हैं ताकि उनकी शिक्षण प्रक्रिया के मार्ग में तकनीकी शिक्षा का अभाव (कोई रोड़ा) न बने।

उपरोक्त प्रश्नों के उत्तर के आधार पर शून्य परिकल्पना-3 कोरोना काल में शिक्षकों व छात्रों पर बदली शिक्षा व्यवस्था के प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जायेगा निरस्त होती है क्योंकि कोरोना काल में बदली शिक्षा व्यवस्था ने सर्वाधिक शिक्षक व छात्रों को ही प्रभावित किया है। जहां छात्रो को ऑनलाइन कक्षा द्वारा पढ़ाया गया समझने में

समस्या आती है वहीं शिक्षकों के लिए भी ऑनलाइन कक्षाओं के माध्यम से शिक्षण कार्य करना बेहद चुनौतीपूर्ण रहा है। ऑनलाइन कक्षा में छात्रों के घर का वातावरण, शिक्षक के घर का वातावरण तो कभी नेटवर्क का न होगना अध्ययन-अध्यापन कार्य को निरंतर बाधित करता है। कोरोना काल में छात्रों के शारीरिक व मानसिक स्तर पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है। जहां अभिभावक व शिक्षक छात्रों को मोबाइल व टी.वी. कम देखने की सलाह देते थे वहीं आज ऑनलाइन कक्षा के कारण वह स्वयं इनका अधिक से अधिक प्रयोग करने के लिए छात्रों को बाध्य करते हैं। स्क्रीन टाइम बढ़ने के कारण बालकों में सिरदर्द, आंखों में दर्द आदि की समस्या बहुत आम होती दिखाई दे रही है। कक्षा का समय निश्चित न होने के कारण बालक स्वयं को स्वतंत्र महसूस नहीं कर पा रहे हैं। बालकों में समूह भावना, नेतृत्व क्षमता आदि का अभाव होता नजर आ रहा है। इसी प्रकार शिक्षकों को भी अत्यधिक समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। कुछ शिक्षक तकनीकी से अधिक परिचित नहीं है जिस कारण ऑनलाइन क्लास देने में उन्हें समस्या प्रतीत होती है कुछ विषयों के अध्यापकों (जैसे गणित) के समक्ष सबसे बड़ी समस्या बालकों को समझाने की है क्योंकि इन विषयों को बालक जटिल समझते हैं इतना ही नहीं ऑनलाइन कक्षा में बालकों की अनुपस्थिति की संख्या बहुत अधिक बढ़ती जा रही है।

उपरोक्त प्रश्नों के उत्तर के आधार पर शून्य परिकल्पना-4 कोरोना काल में शिक्षा के समान वितरण में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जायेगा' अस्वीकृत होती है क्योंकि कोरोना काल में शिक्षा के वितरण में असमानता बहुत अधिक है। शिक्षा के असमान वितरण के कई कारण है जैसे प्रत्येक बालक के परिवार की आर्थिक स्थिति समान नहीं है जिस कारण उनके लिए तकनीकी सुविधाएं (फोन, लेपटॉप) आदि की उपलब्धता में असमानता है जो बालकों की शिक्षा को प्रभावित करता है। इसी प्रकार प्रत्येक बालक को शांतिपूर्ण वातावरण उपलब्ध नहीं है क्योंकि प्रत्तयेक बालक की पारिवारिक वातावरण समान नहीं है। प्रत्येक बालक को एक समान भौगोलिक वातावरण भी उपलब्ध नहीं है जिस कारण नेटवर्क की उपलब्धता भी प्रत्येक स्थान पर समान नहीं है। इन सभी असमानताओं के कारण ही शिक्षा का वितरण भी प्रत्येक स्थान पर असमान है। कई परिवार ऐसे हैं जो तकनीकी से परिचित हीं नहीं है तथा बालकों को भी सहयोग देने में असमर्थ हैं। बालकों को सहयोग व मार्गदर्शन के अभाव में वे ऐसे बालकों से पीछे हो रहे हैं जिन्हें उनके परिवार द्वारा समय-समय पर उचित मार्गदर्शन व सहयोग प्राप्त होता रहता है।

निष्कर्ष

1. कोरोना काल में शिक्षा का स्वरूप ऑनलाइन कक्षा का हो गया है। सभी विद्यार्थियों को ऑनलाइन कक्षा के माध्यम से पढ़ाया जा रहा है।
2. ऑनलाइन कक्षा की अवधि ऑफलाइन कक्षा से कम है। 58 प्रतिशत बच्चों ने इसे कम बताया।
3. ऑनलाइन कक्षा में 88 प्रतिशत विद्यार्थी समय से उपस्थित होते हैं।
4. कुछ विद्यार्थी का कहना है कि हर विषय की कक्षा नहीं हो रही है।

Vol.1 Issue 2 June 2023 EISSN: 2583-7575

5. अधिकतर विद्यार्थी ऐसे थे, जिन्होंने पहले कभी ऑनलाइन कक्षा नहीं ली।
6. अधिकतर विद्यार्थी ऑनलाइन कक्षा में रुचि नहीं लेते।
7. अधिकतर नेटवर्क की समस्या रही हैं।
8. पाठ्य सहगामी क्रियाएँ ना होने के कारण विद्यार्थियों पर शारीरिक व मानसिक नकारात्मक प्रभाव पड़ा है।
9. इस समय पर वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के द्वारा ही परीक्षा ली गई है।
10. कुछ शिक्षकों ने ऑनलाइन कक्षा द्वारा अध्ययन नहीं कराया है।
11. अध्यापकों के अनुसार कुछ अनुशासन हीनता विद्यार्थियों में पाई गई। वह पूरी कक्षा नहीं लेते।
12. ऑनलाइन कक्षा में विद्यार्थियों की उतनी प्रगति नहीं हो पाई जो ऑफलाइन कक्षा में होती ती।
13. ऑनलाइन कक्षा में अभिभावकों का हस्तक्षेप बढ़ गया।
14. अभिभावकों के अनुसार बच्चे ऑनलाइन कक्षा में कम दिलचस्पी ले रहे हैं और पढ़ते भी नहीं हैं।
15. ऑनलाइन कक्षा से बच्चों की आँखों और मस्तिष्क पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा है।
16. अधिकतर विद्यार्थी, शिक्षक व अभिभावक ऑनलाइन कक्षा से संतुष्ट नहीं पाए गये हैं।

शैक्षिक उपादेयता

प्रस्तुत अध्ययन द्वारा भारत के आगरा शहर की कोरोना काल में बदली शिक्षा व्यवस्था के विषय. में जानकारी प्राप्त होती है, जिससे हम भावी जीवन में ऐसी विषम परिस्थितियों में ऑनलाइन कक्षा व अन्य प्रभावकारी माध्यमों द्वारा शिक्षण कार्य कर सकते हैं तथा इस समय जो कठिनाइयाँ छात्रों व शिक्षकों के सामने आई है, उनका समाधान कर शिक्षण कार्य को और अधिक प्रभावी बना सकते हैं।

ऑनलाइन कक्षाओं का जो भी कमजोर पक्ष हैं, उन्हें हम ऑफलाइन कक्षा के द्वारा अधिक रोचक व प्रभावशाली बना सकते हैं।

ऑनलाइन कक्षाओं के दौरान जो समस्याओं सामने आई हैं, उनका समाधान ढूँढ़कर बेहतर विकल्प लाये जा सकते हैं। अध्यापक विद्यार्थी व परिवार के व्यक्तियों ने इस समय पर जो भी मानसिक कष्ट उठाए, शिक्षा के संबंध में वह भविष्य में कम हों, उसकी योजना बनाई जा सकती हैं।

संदर्भ

भाई योगेंद्र जीत, शिक्षा में नवाचार और नवीन प्रवृत्तियाँ, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, पृ.सं. 12

भारत ज्ञान कोष, इनसाइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका, इंडिया प्र.लि., नई दिल्ली और पॉपुलर प्रकाशन, मुंबई।

मिश्रा, एल.एम. शिक्षा एवं शिक्षण सिद्धांत, आगरा पब्लिकेशन पंचम संस्करण 2009, आगरा-2, पृ.सं. 48

शर्मा, रामदत्त, डी.पी. विजयवर्गी पूर्वोद्धत, प्र.य.-2

http://economictimes.com/hindi
khabar.nd.tv.com
navbharattimes.com
Navbharattimes.iddiatimes.com
www.patrika.com
Shodhganga.inflibnet.ac.in
thewirehindi.com
unicef.org
www.amarujala.com
www.jagran.com
www.mpinfo.org/news/todaynews.com